दादा भगवान परिवार का
जुलाई २०२०
शुल्क प्रति नकल :₹ २०/-

# अक्रम एक्सप्रेस

# त्रिमंत्र

वर्ष : ८ अंक : ४
अखंड क्रमांक : ८९
अगस्त २०२०



संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org



Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.



© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved


## संपादकीय

बालमित्रों,

जो मन को स्थिर करता है उसे मंत्र कहते हैं। हरएक धर्म में, भगवान को नमस्कार करने के लिए मंत्र होता है। सभी भक्त उस मंत्र का आराधन बहुत श्रद्धा और भक्ति से करते हैं। शायद आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि यह त्रिमंत्र भला कौन सा नया मंत्र है....

बताता हूँ आपको।

हमारे हिंदू धर्म में तीन मुख्य धर्म हैं। जैन, वैष्णव और शिव। परम पूज्य दादाश्री ने, धर्मों में से पक्षपात निकालने के लिए इन तीन धर्मों के मंत्रों को मिला दिया है और वही है यह त्रिमंत्र।

इस त्रिमंत्र का महत्व जितना आंका जाए उतना कम है। इस अंक द्वारा आप जानोगे कि पूज्य दादाश्री ने इस मंत्र के लिए क्या कहा है। और साथ ही हम यह भी जानेंगे कि इस मंत्र से हम किसे नमस्कार करते हैं।

तो चलिए, यह अंक पढ़ें और त्रिमंत्र को जाने और हररोज़ बोले।

-डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

# दादाजी कहते हैं...

दादाश्री - हमारे दिए गए त्रिमंत्र में ग़ज़ब की शक्ति है! सभी देवता खुश रहते हैं और विघ्न नहीं आते! यह त्रिमंत्र निष्पक्षपाती मंत्र है। यह हिंदुस्तान के सभी लोगों के लिए है। इसलिए यदि यह त्रिमंत्र बोलोगे तो बहुत फायदा होगा। क्योंकि इसमें जो सबसे उच्च कोटि के जीव हैं, उन्हें नमस्कार करना सिखाया गया है। यदि हम उन्हें नमस्कार करेंगे तो हमें बहुत फायदा होगा।

प्रश्नकर्ता : तीनों मंत्रो को एक साथ बोलने से क्या फायदा होता है?

दादाश्री : परेशानियाँ खत्म हो जाती हैं। यदि व्यवहार में परेशानी आए तो वह कम हो जाती है। यदि कोई व्यक्ति सिर पर भारी वज़न लेकर जा रहा हो और थका हुआ हो। उतने में यदि वह अचानक कुछ नया देखेगा तो क्या होगा? वह उस द्रश्य को देखने में तल्लीन हो जाएगा और उतनी देर के लिए वह अपने सिर के वज़न को भूल जाएगा। वज़न तो है, फिर भी उसे भार नहीं लगता। इसी तरह, यह त्रिमंत्र बोलने से संसार में आने वाले दुखों का भार ही नहीं लगता!

इस मंत्र में जैनों का, वैष्णव का और शिव का, इन तीनों मंत्रों का समावेश है। यदि आपको देवताओं का सहारा चाहिए तो सभी मंत्र मिलाकर बोलो। जब यह बोलते हो तब उनके जो शासनदेवता (देवता जो धर्म का रक्षण करते हैं) होते हैं, वे आपकी हेल्प करते हैं। जैसे पुलिस वाले से थोड़ी जान पहचान होती है तो हम छूट जाते हैं या नहीं छूट जाते? उसी तरह वे देवता इस मंत्र को बोलने से खुश हो जाते हैं, और हमारी मुश्किलें खत्म हो जाती हैं।

यह त्रिमंत्र सुबह पाँच बार हमारा चेहरा याद करके बोलोगे तो कभी दुःख नहीं आएगा। और आगे चलकर मोक्ष भी मिलेगा। हम उसकी ज़िम्मेदारी लेते हैं!

# नमो अरिहंताणं

-नमो अर्थात नमस्कार,
- अरि अर्थात शत्रु,
- 'हंताणं' अर्थात नाश करने वाला।

इसमें हम अरिहंत भगवंतों को नमस्कार करते हैं। जिन्होंने अपने अंदर के सभी शत्रुओं को, जैसे कि क्रोध-मान-माया-लोभ को सम्पूर्ण रूप से नाश कर दिया है।

अरिहंत किसे कहा जाता है? जो हाज़िर होते हैं उन्हें। फिलहाल श्री सीमंधर स्वामी अरिहंत हैं। वे वर्तमान तीथर्कर हैं। वे हमारी पृथ्वी पर नहीं हैं लेकिन हमारी पृथ्वी से लाखों मील दूर, महाविदेह क्षेत्र में हैं। हाज़िर भगवान के दर्शन करेंगे तो कल्याण होगा।

तो चलिए हम जानते हैं, ऐसे भगवान की अद्भुत बातें।

## भगवान की अद्भुत वाणी

अरिहंत भगवान की वाणी को देशना कहते हैं। जो लोगों के कल्याण के लिए ही निरंतर निकलती रहती है। भगवान की देशना सुनने साधु, साध्वी, गणधर, राजा-महाराजा, देवी-देवता, मनुष्य सभी बैठते हैं। साथ ही साथ शेर, ख़रगोश, सिंह, बकरी जैसे प्राणी भी अपना हिंसक भाव, भय, बैर वगैरह, भूलकर एक साथ बैठते हैं। हरएक जीव अपनी अपनी भाषा में भगवान की वाणी समझ जाता है। भगवान की वाणी से कभी किसी को दुःख नहीं होता। ख़ास बात यह भी है कि भगवान की देशना सुनने वालों को भूख, प्यास या थकान भी नहीं लगती।

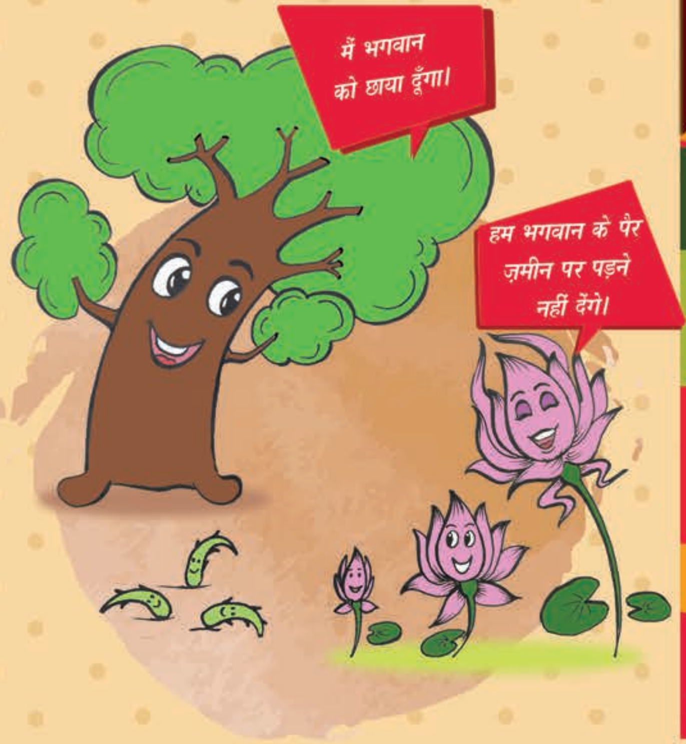


# भगवान के आश्चर्य!

भगवान जहां विचरण करते हैं वहाँ सभी ऋतुओं के फल मिलते हैं। ५०० योजन तक रोग नहीं होते। जीव जंतुओं को परेशानी नहीं होती। हमेशा करोड़ों देव-देवियाँ भगवान की सेवा में रहते हैं।

कितनी अद्‌भुत बातें हैं भगवान की! अब जब त्रिमंत्र में 'नमो अरिहंताणम' बोलोगे तब आँखों के सामने सीमंधर स्वामी का चित्र रखकर, दिल से और भाव से प्रभु को नमस्कार करना। भगवान के पास ज्ञान है, आनंद है। उनके दर्शन करने से हममें भी ज्ञान और आनंद उत्पन्न होंगे।

नीचे के चित्र में, जो भगवान की देशना में हाज़िर होते हैं, ऐसे १२ चित्रों को कलर करना है।

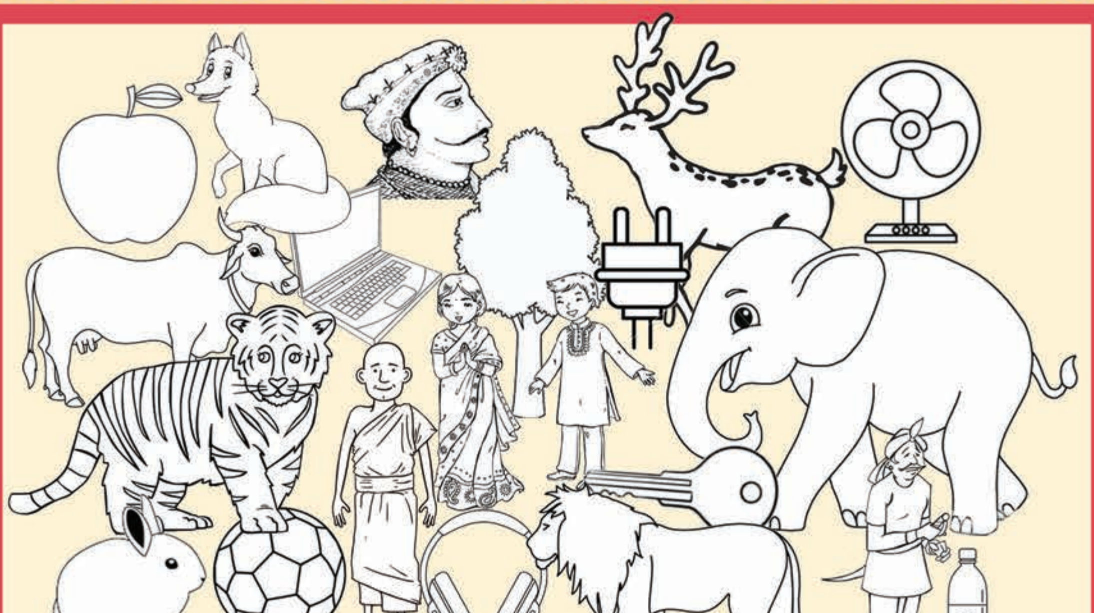

# नमो सिद्धाणं

## यहाँ हम सिद्ध भगवंतों को नमस्कार करते हैं।

- जिन्होंने अपने अंदर के शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है।
- जो अपने सभी कर्मों को खत्म करके मोक्ष में विराजमान हैं।
- चौबीसों तीर्थंकर सिद्ध भगवान कहे जाते हैं।

चौबीसों तीर्थंकर सिद्ध भगवान कहे जाते हैं। एक बार शरीर छोड़ने के बाद फिर वापिस शरीर नहीं मिलता। वे सिद्धगति में निरंतर आनंद में रहते हैं।

## प्रभु के दर्शन

चलिए, हम सांतवे तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ भगवान, जो अभी सिद्धगति में विराजमान हैं, उनकी एक कहानी पढ़ते हैं।

लाखों साल पहले की बात है। बाल तीर्थंकर का राजमहल गंगा नदी के किनारे था। वे कई बार गंगा नदी के किनारे घूमने जाते थे।

एक बार जब बालक सुपार्श्वनाथ गंगा नदी में नौका विहार कर रहे थे तब एक अद्भुत घटना हुई। एक बड़ा मगरमच्छ तेज़ी से उनकी नौका के पीछे

आ रहा था। वह नौका तक पहुँचने के लिए तेज़ी से आ रहा था। किनारे खड़े हुए लोगों ने यह द्रश्य देखा। सभी भयभीत हो गए कि मगरमच्छ प्रभु की नौका को नुकसान पहुँचाएगा। प्रभु ने भी मगरमच्छ को देखा। फिर भी वे निर्भयता से नौका में बैठकर विहार का आनंद लेते रहे। मानो वे मगरमच्छ के अंतर का रहस्य जान गए हों!

कुछ देर बाद उस मगर ने नौका के पास पहुँचकर वहाँ एक ज़ोरदार छलांग लगाई। और दूसरे ही क्षण नौका के सामने आकर खड़ा हो गया। सभी आश्चर्य से देख रहे थे। तभी मगरमच्छ ने सिर उठाकर अपने आगे के दो पैर बाहर निकाले, मानलो अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रभु को नमस्कार कर रहा हो! प्रभु की अपार तेजस्वी, शांत, सुंदर मुद्रा देखकर उसे लगा कि, "गंगा नदी के बीच तीर्थंकर प्रभु के दर्शन का महाभाग्य मुझे कहाँ से! प्रभु दर्शन का लाभ नदी में कहाँ से मिले!" इस तरह, अत्यंत उल्लास से वह प्रभु के दर्शन कर रहा था।

मगरमच्छ जैसे प्राणी पर प्रभु का ऐसा प्रभाव देखकर सभी मनुष्य प्रसन्न हुए। प्रभु ने भी मगरमच्छ को मीठी नज़र से देखा। उसके आनंद का पार नहीं था। अचानक, मगरमच्छ की जगह वहाँ एक देवता प्रकट हुए। वास्तव में, एक देवता, प्रभु के साथ पानी में खेलने और भक्ति करने के लिए मगरमच्छ का रूप लेकर आए थें। उस समय गंगा नदी में मगरमच्छ के साथ दूसरे हज़ारों जल के प्राणी भी प्रभु के दर्शन करने नौका के आसपास इकट्ठे हो गए।

प्रभु के दर्शन से अद्‌भुत संतोष प्राप्त करके सभी प्राणी आनंदमय हो गए। प्रभु के दर्शन से जहाँ प्राणी को भी अपार आनंद होता हैं, वहाँ मनुष्य के आनंद का तो क्या कहना!

लाखों साल का आयुष्य पूरा करके सुपार्श्वनाथ भगवान निर्वाण प्राप्त करके आज सिद्धगति में विराजमान हैं। जब हम 'नमो सिद्धाणं' बोलते हैं तब हम सिद्धगति में विराजमान सिद्ध भगवंतों को नमस्कार पहुँचाते हैं।

# नमो आयरियाणं

*यहाँ हम आचार्य भगवंतों को नमस्कार करते हैं।*

- *जिन्हें आत्मज्ञान हुआ हो और दूसरों को आत्मज्ञान करवा सकें।*
- *अरिहंत भगवान के कहे हुए आचार का जो पालन करते हैं और दूसरों से पालन करवाते हैं,*

*उन्हें आचार्य भगवान कहते हैं।*

## वंकचूल का नियम

ढीपुरी नगरी के राजा विमलयश का पुत्र पुष्पचूल राज्य के लोगों को बहुत परेशान करता था। वह कई उल्टे काम करता था। इसलिए उसका नाम वंकचूल पड़ गया था। वंकचूल की करतूतों से परेशान होकर नगर के बड़े लोगों ने राजा से वंकचूल की शिकायत की। हररोज़ की शिकायतों से थककर राजा ने पुत्र को बुलाकर कहा, "यदि तुझे अच्छी तरह रहना हो तो यहाँ रह, नहीं तो निकल जा मेरे राज्य से बाहर!"

वंकचूल नगर छोड़कर चला गया। उसके साथ वंकचूल की बहन पुष्पचूला और पत्नी भी चली गई। वंकचूल राजपुत्र था, धनुर्धारी था और पराक्रमी था। वह एक लुटेरों की टोली में जुड़ गया और थोड़े ही दिनों में लुटेरों का सरदार बन गया। उसने एक सिंहगुहा नामक पल्ली में अपना छोटा सा राज्य भी बना लिया था।

एक बार एक आचार्य महाराज विहार करते-करते जंगल में फँस गए। चातुर्मास के दिन नज़दीक आ रहे थे। साधु आचार्यो चातुर्मास में विहार नहीं करते, इसलिए उन्होंने चातुर्मास के समय वंकचूल से सिंहगुहा में रहने की अनुमति माँगी।

वंकचूल ने कहा, "महाराज यहाँ जगह की कमी नहीं है लेकिन हम चोरी का काम करते हैं। आप यहाँ रहकर सभी को धर्म संदेश देकर सभी का मन पलट दोगे तो मेरी पल्ली तो टूट जाएगी। मैं एक शर्त के साथ आपको यहाँ रखूँगा कि आप किसी को धर्म उपदेश का एक अक्षर भी नहीं देंगे।" आचार्य ने वंकचूल की बात कबूल कर ली।

चातुर्मास खत्म हुआ इसलिए वंकचूल और पल्ली के लोग आचार्य और उनकी टोली को विदा करने आए। जब पल्ली की सीमा पूरी हुई तब वंकचूल ने आचार्य भगवंत से कहा, "महाराज, क्योंकि अब हम बिछड़ रहे हैं तो अब आपको जो भी उपदेश देना हो वह दीजिए।"

आचार्य बोले, "वंकचूल, हमारे मिलने की याद में, तेरी इच्छा हो तो मैं तुझे थोड़े नियम देना चाहता हूँ।"

"ठीक है दीजिए, लेकिन आप मेरी स्थिति का ध्यान रखना। मैं चोरी नहीं छोडूंगा और चोरी करते समय मुझसे हिंसा हो जाती है वह बंद नहीं होगी। इसलिए, इसमें से कुछ भी मत कहना।" वंकचूल ने स्पष्टता की।

आचार्य ने वंकचूल की बात सुनी और फिर उसे तीन नियम दिए, "कोई भी अनजान फल मत खाना। किसी

को मारना पड़े तो पाँच-सात कदम पीछे जाकर मारना। कौए का मांस मत खाना है।"

वंक्चूल कुछ विचार में पड़ गया। फिर बोला, "महाराज, कबूल है। मैं इन नियमों का ज़रूर पालन करूँगा।"

दिन बीतने लगे। एक दिन वंक्चूल अपने तीन साथियों के साथ जंगल की गहरी झाड़ियों में हीरे, मोती, और ज़ेवर का ढेर लेकर बैठा था। चारों को बहुत भूख लगी थी। उसके साथी जंगल से थोड़े फल लेकर आए। फल सुंदर थे। खुशबू भी अच्छी थी।

वंक्चूल ने पूछा, "इस फल का नाम क्या है?"

किसी को फल के नाम का नहीं पता था।

वंक्चूल ने कहा, "मैं अनजाना फल नहीं खा सकता।"

उसके साथी ने कहा, "आपको नहीं खाना हो तो कोई बात नहीं, हम तो खाएँगे।"

तीनों ने फल खाया। कुछ ही देर में तीनों की आँखें बंद हो गई और एक के बाद एक तीनों की वहीं मृत्यु हो गई। फल ज़हरीले थे।

वंक्चूल को आचार्य महाराज याद आए, "कितने उपकारी पुरुष! अनजाना फल नहीं खाने का नियम देकर मेरी जान बचाई।"

एक बार वंक्चूल आधी रात को अपनी कुटिया में पहुँचा। उसने दूर से देखा कि कोई अनजान व्यक्ति उसके पलंग पर गहरी नींद सो रहा था। वंक्चूल को बहुत गुस्सा आ गया। उसने म्यान में से तलवार निकाली और एक ही वार में व्यक्ति को मारने का विचार किया। तभी उसे गुरु को दिया गया सात कदम पीछे हटने का नियम याद आया। वह सात कदम पीछे गया, तभी खुली तलवार दीवार से टकराई और बिस्तर पर सोया हुआ व्यक्ति एकदम बैठ गया और बोला, "कौन है?"

अपनी बहन पुष्पचूला को देखकर वंक्चूल के हाथ की तलवार वैसी ही रह गई। "बहन पुष्पचूला, तूने पुरुष के कपड़े क्यों पहने हैं?" वंक्चूल ने पूछा।

"भाई, आज पल्ली में नाटक हो रहा था इसलिए मैं आपके कपड़े पहनकर देखने गई थी। वापस लौटी तो थककर बेहाल हो गई थी इसलिए आते ही भाभी के साथ खाट पर सो गई। लेकिन आप इतने गुस्से में क्यों हो?"

पुष्पचूला ने पूछा।

"बहन, आज यदि आचार्य का दिया हुआ नियम नहीं होता तो मुझसे बहुत बड़ा गुनाह हो जाता।" वंक्चूल ने मन ही मन आचार्य को वंदन किया और खुद को घोर अपराध में से बचाने के लिए दिल से उपकार माना।

सालों बीत गए। एक बार वंक्चूल एक शस्त्र से घायल हो गया। उज्जैन के राजा, वंक्चूल के खास मित्र थे। इसलिए उसे उज्जैन नगरी के राजमहल में ले जाया गया। राज्य के वैद्यों ने अनेक उपचार किए लेकिन कुछ फ़र्क नहीं पड़ा। एक वृद्ध वैद्य को वंक्चूल की नाड़ी देखकर उसके घाव का उपचार मिल गया। उन्होंने राजा से कहा, "राजन, यदि वंक्चूल को कौए का मांस दिया जाए तो उसे ज़रूर फायदा होगा।"

वंक्चूल ने कहा, "वैद्यराज, दूसरी कोई उपाय हो तो बताइए। मैं कौए का मांस तो नही खाऊँगा। मैंने आचार्य भगवंत से कौए का मांस कभी नहीं खाने का नियम लिया है।"

राजा ने कहा, "वंक्चूल तुम्हारा घांव बहुत गहरा है। वैद्यों के पास इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है। नियम में थोड़ी बहुत छूट होती है। कहाँ तुम्हें इच्छा से खाना है। यह तो रोग मिटाने के लिए ही खाना है न!"

यह सुनकर वंक्चूल ने कहा, "मृत्यु आएगी तो हँसते-हँसते स्वीकार कर लूँगा। लेकिन मेरा नियम तो नहीं तोड़ूँगा। आचार्य के दिए हुए नियम ने मेरा जीवन बदल दिया है। अब तो किसी भी कीमत पर मैं यह नियम नहीं तोड़ूँगा।"

वंक्चूल के धर्ममित्र ने भी उसे समझाया, "भाई, आज नियम तोड़ दे। ठीक हो जाने के बाद प्रायश्चित कर लेना। लेकिन वंक्चूल अडिग रहा।"

वंक्चूल के जीवन का अंतिम क्षण था। उसने दोनों हाथ जोड़कर, दिल से आचार्य भगवान को याद करके प्रार्थना की, "हे भगवंत मुझे जन्मों तक आपके बताए हुए धर्म की शरण मिले। मुझे अरिहंत भगवान का शरण प्राप्त हो।" और यह बोलते ही वंक्चूल के प्राण निकल गए और उसने बारहवें देवलोक में स्थान प्राप्त किया। और इस तरह, आचार्य भगवंत के वचनों को दृढ़ता से पालन करने से, अनेकों पापों के बावजूद, उन पापों को धोकर वंक्चूल को उच्च गति प्राप्त हुई।

दादाश्री कहते हैं कि जैसे सिंह की गर्जन से लोमड़ी मांस की उल्टी कर देती है वैसे ही आचार्य महाराज के प्रताप से जीव अपने पापों की उल्टी कर देते हैं। दादाश्री 'आचार्य भगवंत' कहलाते हैं। जब हम नमो आयरियाणं बोलते हैं, तब हम दिल से दादाश्री को नमस्कार करते हैं और उनकी आज्ञा में रहकर सर्व दुखों से मुक्त होते हैं।

# नमो उवज्झायाणं

यहाँ हम उपाध्याय भगवंतों को नमस्कार करते हैं।

- उपाध्याय भगवंतों को आत्मज्ञान हुआ होता है।
- खुद भी शास्त्र पढ़ रहे होते हैं और दूसरों को पढ़ाते हैं।

# नमो लोए सव्वासाहूणं

लोए अर्थात् लोक (ब्रह्मांड)। यहाँ हम पूरे लोक में जितने साधु हैं, उन सभी को नमस्कार करते हैं।

- जो आत्मदशा साधे (खुद के आत्मा की अनुभूति प्राप्त करें) वह साधु।

नीचे दिए गए पिक्चर्स में जो साधु दूसरों से अलग है उसे ढूँढिए।

# एसो पंच नमुक्कारो

यहाँ हम ऊपर कहे हुए पाँच भगवंतों को नमस्कार करते हैं...

# सव्व पावप्पणासणों

## जिससे सभी पाप नाश हो जाते हैं....

निचे दिए गए चित्र में एसो पंच नमुक्कारो से सव्व पावप्पणासणो तक पहुँचने के लिए पांचो भगवंतो को नमस्कार करके शॉर्टकट रास्ता ढूँढ़ो।

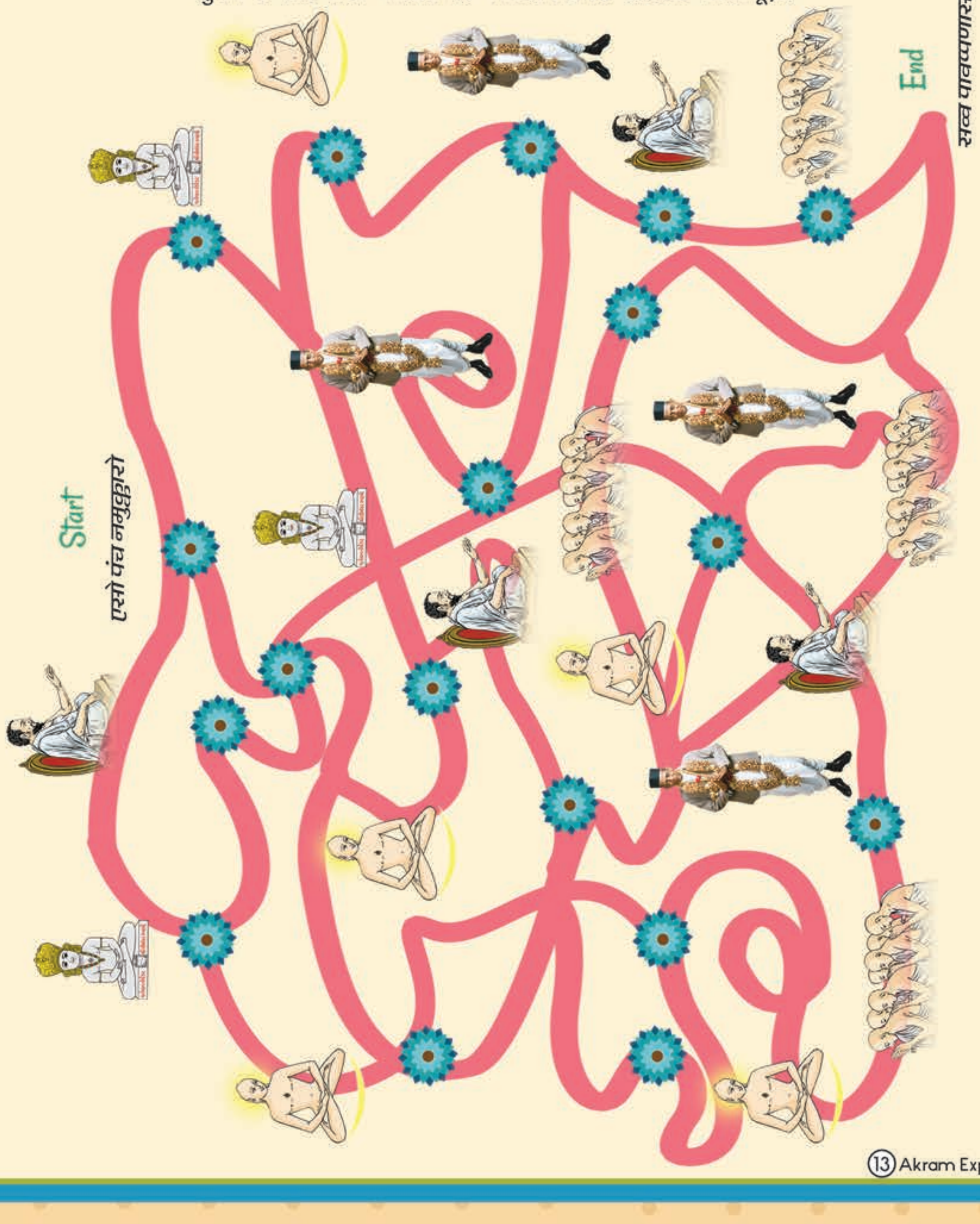

# मंगलाणं च सव्वेसिं

# पढमं हवइ मंगलम्

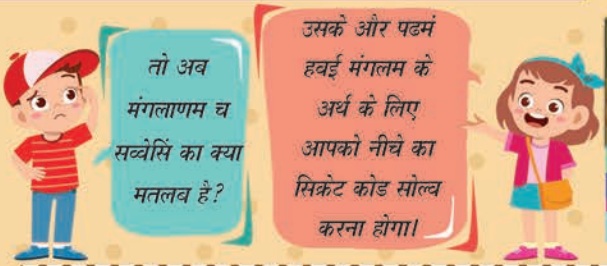


सभी मंत्रों में सबसे ज़्यादा कल्याणकारक होने की वजह से सबसे पहले बोला जाता है।

आपको मेरी सूचना पढ़कर आगे बढ़ना। पहले यहाँ मंदिर के गार्डन में दिए हुए गणित के सवाल को सोल्व करें और फिर तालाब के बतक पर लिखे उसके जवाब से मेच करें। (जैसे कि, ५ x ४ = २० तो बतक पर २० - सभी) फिर उन शब्दों को लेकर उससे एक वाक्य बनाना है और वही वाक्य आपको इन दो मंत्रो का अर्थ समझाएगा।

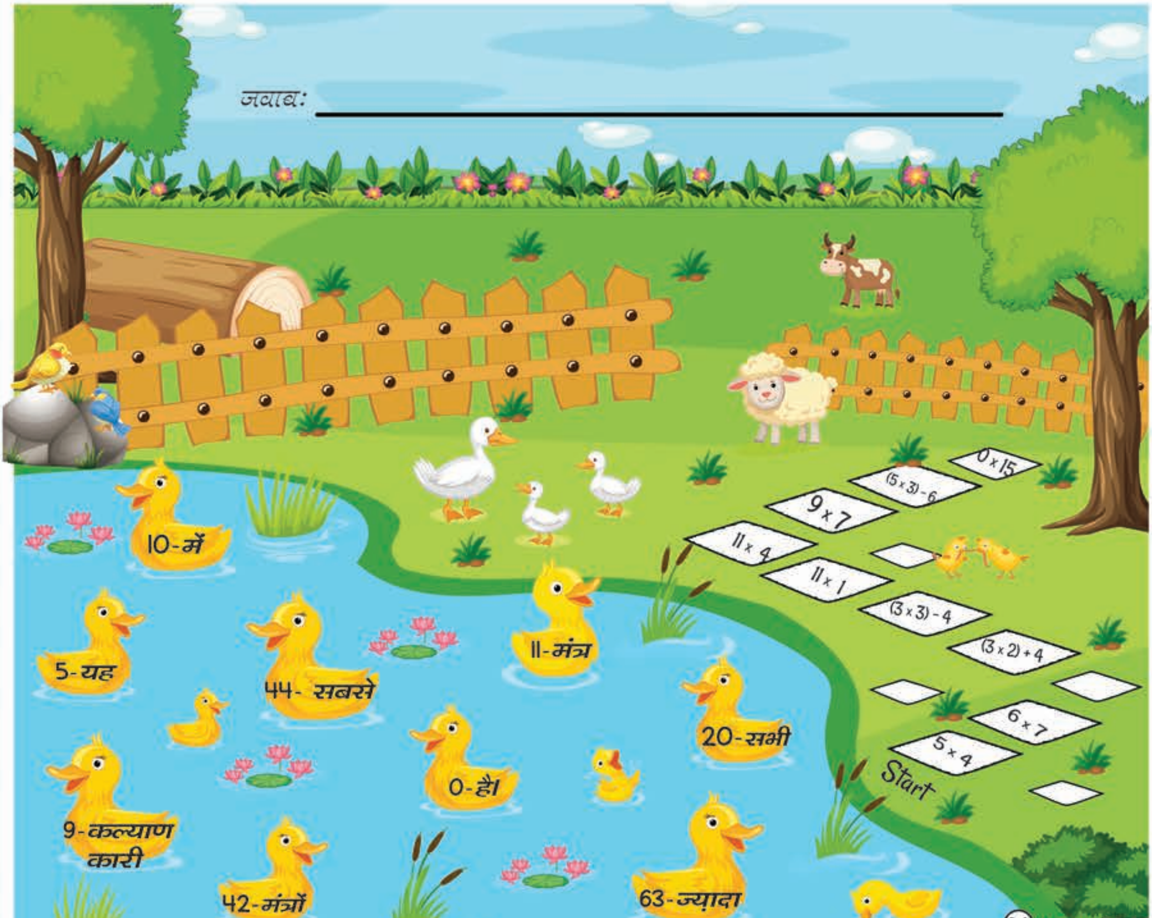

# ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

जो नर में से नारायण (भगवान) हुए उन वासुदेव भगवानों को इसमें नमस्कार करते हैं। वासुदेव कैसे होते हैं?

इस काल के श्रीकृष्ण वासुदेव कहलाते हैं। इसलिए यह नमस्कार उन्हें पहुँचता है। उनके जो शासन देव होते हैं उन्हें पहुँचता है। कृष्ण भगवान के अंदर सम्पूर्ण भगवान प्रकट हुए हैं इसलिए वे देहधारी रूप वाले भगवान कहलाते हैं।

कृष्ण भगवान कभी किसी का उल्टा नहीं देखते। एक बार श्री कृष्ण के गुणों की परीक्षा करने के लिए देव ने एक विकृत और दुर्गंध वाले कुत्ते का मृत देह उनके रास्तें में रख दिया। लेकिन कृष्ण भगवान ने अन्य कुछ भी देखे बिना सिर्फ उस कुत्ते के मोती जैसे दांतों की प्रसंशा की।

दूसरा एक दृष्टांत देखते हैं। एक बार श्रीकृष्ण अपने भाई बलराम के साथ, पांडवों से मिलने दक्षिण मथुरा जाने के निकले। रास्ते में श्रीकृष्ण को प्यास लगी। बलराम उनके लिए पानी लेने गए और कृष्ण भगवान एक वस्त्र ओढ़कर लेट गए। ज़राकुमार नामक एक शिकारी ने दूर से कृष्ण भगवान के पैर को हिरन समझकर, पैर पर ज़हरीला तीर मारा। जब ज़राकुमार भगवान के पास आए तब उन्हें बहुत पश्चाताप हुआ।

प्राण छोड़ने से पहले श्रीकृष्ण ने ज़राकुमार से कहा, "बलराम आएँ उससे पहले आप चले जाओ। नहीं तो बलराम आपको मार डालेंगे।"

इस तरह श्रीकृष्ण ने जीवन की अंतिम पलों में भी खुद को मारने वाले व्यक्ति पर भी करुणा रखी।

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' बोलते हैं तब श्रीकृष्ण का चित्रपट को याद करके उन्हें दिल से नमस्कार करना है।

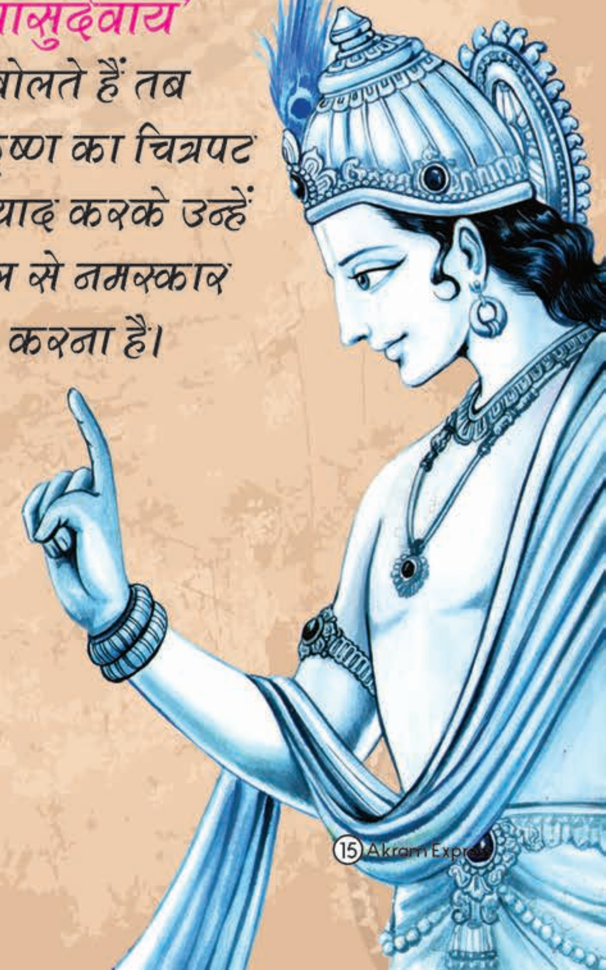

# ॐ नमः शिवाय

शिव अर्थात् कल्याण स्वरूप। इस दुनिया में जो कल्याण स्वरूप हो गए हैं, जीवित हैं, दूसरों को कल्याण का मार्ग बताते हैं, उन्हें शिव कहते हैं। अर्थात् कि 'ज्ञानी पुरुष', इसमें उन्हें नमस्कार करते हैं।

चलिए, एक मज़े का सुडोकु खेलते हैं। शिव-मंदिर से हम चार त्रिशूल, चार ॐ, चार शिवलिंग और चार डमरू लाए हैं। इन सभी चीजों को नीचे दिए चोकोर खानों में इस तरह सेट करे कि एक भी चीज़ किसी भी 'रो' (सीधी लाइन) में या 'कोलम' (खड़ी लाइन) में एक से ज़्यादा बार नहीं आए। चोकोर खानों में आप चीज़ों का नाम लिख सकते हो या उसका चित्र बना सकते हो। क्या आप तैयार हो?

# जय सच्चिदानंद

जय अर्थात् गुण गाना।
सत अर्थात् अविनाशी।
चित अर्थात् ज्ञान और दर्शन।
आनंद अर्थात् परमानंद।

जब हम सच्चिदानंद बोलते हैं, तब हम सामने वाले के अंदर बैठे हुए भगवान को नमस्कार करके उनके इन गुणों की प्रशंसा करते हैं।

यह त्रिमंत्र है, उसमें यह पहला जैन लोगों का है, यह वासुदेव का और यह शिव का है। और इस सच्चिदानंद में सभी मुस्लिम, यूरोपियन सभी आ गए।

अर्थात् सच्चिदानंद में सभी लोगों के मंत्र आ जाते हैं।

# ऐतिहासिक गौरवगाथा

राजगृही नगरी के श्रेणिक महाराजा ने एक भव्य चित्रशाला बनवाना शुरू किया। इसे बनाने का काम प्रसिद्ध शिल्पियों को सौंपा गया। शिल्पी और राजमिस्त्री पत्थरों को नया जीवन देने में व्यस्त थे। चित्रशाला के आलीशान दरवाज़े बन रहे थे। अचानक एक आश्चर्यजनक घटना हुई।

दिन में दरवाज़ा बनाया जाता था और रात को वह टूटकर गिर जाता था। किसी को इसका कारण समझ में नहीं आ रहा था। हररोज़ काम नए सीरे से आरंभ होता और द्वार पिछले दिन से ज़्यादा भव्य बनता लेकिन रात होते ही वह दरवाज़ा टूट जाता।

राजा श्रेणिक ने इस समस्या को हल करने के लिए एक सभा का आयोजन किया। इस सभा में राज्य के प्रसिद्ध शिल्पकार, गुप्तचर, ज्योतिषी आदि को बुलाया गया।

"क्या कारण है कि यह दरवाज़ा रोज़ रात को टूट जाता है?" राजा ने सभा में पूछा।

अंदर ही अंदर सोच-विचार करने के बाद पुरोहितजी ने राजा से कहा, "दरवाज़े का टूट जाना यह बुरी निशानी है। इसका मतलब यह है कि कोई देवता नाराज़ है। इसलिए हमारा राज्य और राजा जोखिम में हैं।"

यह सुनकर राजा को चिंता हुई, "तो फिर इसका क्या उपाय है?"

"राजन, यज्ञ ही इसका उत्तम उपाय है। यदि कोई सद्गुणी बालक उस देवता को अर्पण किया जाएगा तो यह मुसीबत टल जाएगी," पुरोहितजी ने राजा को बताया।

राजा ने राज्य में घोषणा करने का आदेश दिया।

सिपाहियों ने जगह-जगह ढिंढोरा पीटा, "राजगृही के प्रजाजनो!! ध्यान से सुनो। हमारे राजा एक बड़ा यज्ञ करने वाले हैं। जो माता-पिता अपने उत्तम गुण वाले बच्चे को आहुति के रूप में देवता को अर्पण करेंगे, उन्हें बच्चे के वज़न जितना सोना दिया जाएगा।"

एक गरीब ब्राह्मण की पत्नी भद्रा ने यह घोषणा सुनी। उसने सोचा कि, "गरीबी की वजह से हमारा जीवन बहुत दुखी है। मेरे छः बच्चे हैं। यदि मैं एक बच्चा

देवता को अर्पण कर दूँगी तो क्या फ़र्क पड़ेगा! हमारी सारी ग़रीबी चली जाएगी और परिवार के अन्य लोग खुशी से जी सकेंगे।"

ऐसा सोचकर भद्रा ने अपना सबसे छोटा बेटा अमर कुमार को राजा को सौंप देने का निर्णय किया।

सिपाही अमर कुमार को घर से ले जाने के लिए आए। बच्चे को जब वजह पता चली तो वह बहुत घबरा गया। उसने अपनी माता से बहुत बिनती की। "माता, मेरी ज़िंदगी ऐसे अर्पण मत करो। मुझे मृत्यु से बहुत डर लगता है। मैं बड़ा होकर बहुत कमाऊँगा और आपकी सेवा करूँगा।"

भद्रा ने मुंह फेर लिया और सिपाही ज़बरदस्ती बच्चे को राजमहल ले गए।

अमर कुमार ने परिवार जनों से नगरजनों से खुद को बचाने के लिए बहुत विनती की। लेकिन किसी ने बच्चे की एक नहीं सुनी।

राजमहल पहुँचकर अमर की माता भद्रा को अपने बेटे के वज़न जितने सोने के सिक्के दिए गए। अमर को नहलाया गया, पीतांबर पहनाया, फिर उसे फूलों की माला पहनाकर हवन के सामने खड़ा रखा। पुरोहितजी आँखें बंद करके मंत्रोपचार करने लगे।

छोटा सा अमर बहुत ही निराश हो गया। उसने जैसे ही आँखें बंद की तभी उसे एक महापुरुष की आकृति अपनी आँखों के सामने दिखाई दी। एक बार अमर एक साधु से मिला था। और उन्होंने अमर से कहा था, "अमर कुमार, महामंत्र नवकार मंत्र सर्व दुखों का नाश करने वाला है! संकट के समय इस मंत्र का स्मरण करने से सभी मुश्किलें दूर हो जाती हैं।"

अमर ने मन में नवकार मंत्र का रटन शुरू कर दिया। 'नमो अरिहंताणम...नमो सिद्धाणम...'

सिपाहियों ने अमर को उठाकर चिता पर बिठा दिया। पुरोहितजी ने मंत्रोच्चार करके अग्नि जलाई।

लेकिन तभी एक चमत्कार

हुआ। जो ज्वाला इतनी दूर खड़े लोगों को गर्मी दे रही थी वही अमर को शीतल लगी। और धीरे-धीरे अग्नि बुझ गई। पुरोहितजी ने घी डालकर फिर से अग्नि जलाने की कोशिश की लेकिन उनका हाथ हवा में ही रह गया। सभी विद्वान आश्चर्यचकित हो गए। एक दिव्य सिंहासन प्रकट हुआ और अमर कुमार उसपर विराजमान दिखाई दिया।

"अदभुत! यह बालक कोई दैवी जीव है!" पुरोहितजी बोल उठे। राजा श्रेणिक और वहाँ उपस्थित सभी आश्चर्यचकित होकर अमर कुमार को देख रहे थे।

राजा श्रेणिक अमर कुमार के पैरों में गिरकर बोले, "कृपा करके मुझे क्षमा कीजिए। आज से आप इस राज्य के राजा और मैं आपका सेवक!"

अमर कुमार ने कहा "हे राजन, मैंने इस जगत का प्रेम चख लिया है। तकलीफ़ के समय में किसी ने मेरा रक्षण नहीं किया। सिर्फ़ इस महामंत्र ने ही मेरा निःस्वार्थ रक्षण दिया। मुझे कोई राज्य नहीं चाहिए।"

श्रेणिक राजा ने अमर कुमार से मंत्र के बारे में पूछा, "कुमार, तुमने ऐसे कौनसे मंत्र का जाप किया कि जिसने अग्नि को भी शांत कर दिया? हम दिन में जो भव्य काम करते हैं वह रात को टूट जाता है। इसका कोई उपाय बताइए।"

अमर कुमार ने जवाब दिया, "राजाजी, एक महापुरुष ने मुझे सिखाया था कि संसार में कोई भी मंत्र, नवकार मंत्र से ऊँचा नहीं है। उसका रटन करने से सभी जोखिम टल जाते हैं। आप भी इस मंत्र का श्रद्धा से उपयोग कीजिए।"

इतना कहकर, अमर कुमार उस महापुरुष की खोज में निकल गए।

राजा ने तुरंत ही मंत्रियों को आदेश दिया, "आज ही सोने के अक्षरों में नवकार मंत्र लिखवाकर चित्रशाला के मुख्य द्वार पर लगवाओ।"

उसके बाद, उस आलीशान चित्रशाला के काम में कोई रूकावट नहीं आई।

**ज**
**वा**
**ब**

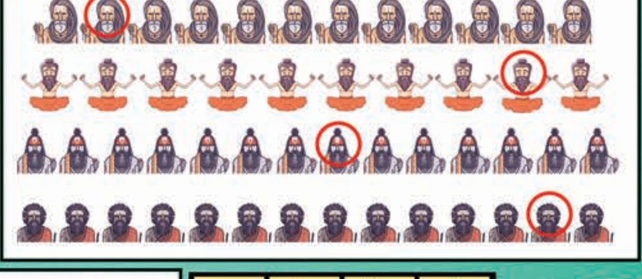

तो अब मंगलाणम च सव्वेसिं का क्या मतलब है?
- सभी मंत्रों में यह मंत्र सबसे ज़्यादा कल्याणकारी है।

Akram Express
August 2020
Year : 8, Issue : 4
Conti. Issue No.: 89

BALVIGNAN

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

# त्रिमंत्र

नमो वीतरागाय
नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वासाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलम् ।। १ ।।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।। २ ।।
ॐ नमः शिवाय ।। ३ ।।
जय सच्चिदानंद

*अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना*

*१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।*

*२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर SMS करें।*

*१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।*

*Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation*
*Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025*